

शिवोम् वाणी

(द्वितीय खण्ड)

■ स्वामी शिवोम् तीर्थ

शिवोम् – वाणी

द्वितीय खण्ड

जिसकी कृपा, प्रेरणा एवं शक्ति के
हृदय में कार्यशील होने के फलस्वरूप यह उद्गार प्रकट हुए,
उसी के श्री चरणों में समर्पित ।

शिवोम्

प्रकाशक:-

श्री विष्णुतीर्थ साधना सेवा न्यास

१२ / ३ ओल्ड पलासिया, इंदौर

मूल्य १२ रुपये

दो शब्द

शिवोम् वाणी द्वितीय खण्ड की भूमिका लेखन के संबंध में श्री कैलाशजी द्वारा जब कहा गया तब यह दास विस्मित सा विचारों में डूब गया; ऐसा लगने लगा कि लिखने के संकेत मिलने के पूर्व श्रीसद्गुरु की कृपा हुई ही है। जिनकी कृपा से “मूक होहि वाचाल पंगु चढ़हि गिरिवर गहन” ऐसे समर्थ गुरुदेव दो शब्द लिखने की भी शक्ति देंगे।

आज से लगभग २० वर्ष पूर्व प्रभु की कृपा के फल स्वरूप बिन खोजे अनायास ही 'मन्त्रदीक्षा' की वर्षा के रूप में प. पू. स्वामी शिवोम् तीर्थ जी महाराज का अनुग्रह प्राप्त हुआ। उसके बाद क्रमशः शक्तिपात, ब्रह्मचर्य एवं संन्यास दीक्षा प्रदान कर अपनी शरण में रख आत्मलीन कर लिया।

करुणासिन्धु महाराजश्री की साधना के गहन क्षणों में भक्तों के कल्याणार्थ, अन्तः की गहराइयों से सहज प्रस्फुटित ब्रह्मानुभूतिमयी शिवोम् वाणी ब्रह्मवाणी ही है। दिव्यवाणी के संबंध में कुछ भी कह पाना तुतलीवाणी का बाल-प्रयास ही कहा जाएगा।

महाराजश्री के गुरुभक्ति से ओत-प्रोत इन भजनों में साधनानुभूति, शक्ति जागरण, ईश्वर प्रणिधान के भावों की जागृती तथा साधना के गूढ़ - तत्वों का अपूर्व प्रकटीकरण हुआ है। हिन्दी के साथ उर्दू एवं पंजाबी भजनों द्वारा ब्रह्म को प्राप्त करने का सहज एवं सरल उपाय बतलाया गया है, जो सर्वसाधारण के लिए भी बोधगम्य है। विश्वास है कि साधक, गायक -संगीतज्ञ, विद्वान एवं मुमुक्षु 'शिवोम् वाणी के भजनों को अपने ही ढंग से गा-गाकर अपनी अन्तः शक्ति को जाग्रतकर साधन पक्ष में अग्रसर हो गुरुशक्ति के साथ तादात्म्य प्राप्त करेंगे।

विद्यातीर्थ

श्री विष्णुतीर्थ साधना सेवान्यास, इंदौर

१२/३, ओल्ड पलासिया

आत्म-कथ्य

वर्षा की जब पहली फुहार आती है और मिट्टी से सौँधी- साँधी सुगन्ध उठने लगती है, वह सुवास पृथ्वी की कृतज्ञता है। हरे होते वृक्ष और उन पर असंख्य फूलों का खिलना, पृथ्वी की प्रार्थना है तथा धरती का धन्यवाद है। इसी प्रकार परम् श्रद्धेय शक्तिपाताचार्य गुरुदेव स्वामी शिवोम् तीर्थजी महाराज की इस भजन माला से बरसी भक्ति रस की फुहार से भरा मन उनके प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता है। इस भजनमाला में बरसे अक्षर-अक्षर से मन धीर-धीरे अपने कष्ट, शिकायत एवं रुष्टता को विस्मृत कर जैसे-जैसे अनुग्रह भाव में डूबता चला जाता है, भूलता ही जाता है, कि उसकी भी कुछ चाह है क्योंकि बिना कामना गुरु कृपा से इतना सब प्राप्त हो रहा है।

"बिन मांगे मोती मिले..." बस मन के द्वार खुले रखने हैं और गुरु अनुग्रह से आनन्द का आगमन हो जाता है।

जीवन निरन्तर हमें दे रहा है... और यही जीवन हमें उस परम आनंद को भी देने में समर्थ है जिसकी हम कल्पना तक नहीं कर सकते। जीवन का सच्चा आनन्द लेने के लिए और ब्रह्मानन्द की कल्पना साकार करने के लिए गुरुजी की इस भक्ति रस माला का हर शब्द अनमोल है।

सिर्फ स्वच्छ रखना है मन को प्रेम को, प्रार्थना को।

.. और गुरु प्रतीक्षा में..

कैलाश अग्रवाल

अभिभाषक

अनुक्रमणिका

१. गणेश वंदना	१	३७. गुरु अमृत	१९
२. आखों का तारा	१	३८. बिन सूरज	२०
३. घट में दीपक	२	३९. गुरु शरणाई	२१
४. तेरा जीवन बीता	२	४०. जोगन जाग री	२१
५. सद्गुरु दिया	३	४१. जग में बार	२२
६. सद्गुरु लियो	३	४२. भेद ब्रह्म	२२
७. गुरु बिन	४	४३. जल सूख गया	२३
८. ते किदरे (पंजाबी)	४	४४. फिर क्यों नहीं (उर्दू)	२३
९. बिरथा जीवन	५	४५. कदे न (पंजाबी)	२४
१०. अब तक राम	५	४६. वाकी बलिहारी	२४
११. कैसे नाम ध्याऊं	६	४७. प्रभु से राखो	२५
१२. मेरा मन उरिझि	६	४८. किरपा गुरुदेव	२५
१३. कौन कमाई	७	४९. गुरु चरनन	२५
१४. एक ही एक	८	५०. राखो लाज	२६
१५ इरादा क्या है बता तू अपना	८	५१. चिदाकाश घर	२६
१६ रिक्त कोई घट नहीं	९	५२. छूटा सकल	२७
१७....राम बिना	९	५३. गगन में	२७
१८ सद्गुरु सहज अनन्ता	१०	५४. प्रभु जी आई	२८
१९ प्रभु प्रेम में रंग दीना	१०	५५. कृपा दृष्टि	२८
२० गति समझ न आवे	११	५६. उलटी गंगा	२९
२१ मन चंचलता	११	५७. मैं मन को	२९
२२ काल पकड़ से	१२	५८. मो को रंगदीना	३०
२३ मेरा मन अमी	१२	५९. मन तो मानता	३०
२४ राम ही राम	१३	६०. आज मोहे भया	३१
२५ नी मेरी (पंजाबी)	१३	६१. प्रभु बिन चारों	३१
२६ ...गुरु याद	१४	६२. साधो में सद्गुरु	३२

२७ ...चढ़ना आसान	१४	६३. जो पाया सो गुरु	३२
२८ परदा उठा (उर्दू)	१५	६४. प्रभुजी आवत	३३
२९ आतम मारग	१५	६५. नाच नाच के	३३
३०. पी घर में	१६	६६. जब तक आतम	३४
३१. राम की लीला	१६	६७. हरि से क्यों न	३४
३२. मैं विषयों के	१७	६८. जा के अगन लगी	३५
३३. मैं ढूंढया (पंजाबी)	१७	६९. वैराग्य बिन	३५
३४. गुरु अवतार	१८	७०. रहे आस न जग की	३६
३५. मन तो साफ	१८	७१. मेरे सद्गुरु	३६
३६. मोह पाश	१९		

(१) गणेश वंदना

जय जय जय जय गणपति स्वामी ।
विघ्न विनाशक, मंगलदायक हे प्रभु अन्तर्यामी॥
शंकर सुत गणनायक तुम हो, हरो विपद प्रभु मोरी ।
हम अज्ञानी बालक तेरे, राखो लाज हे स्वामी ॥
कष्ट हरण भव भंजक प्रभुजी, हे देवों के देवा ।
शरण पड़े की विरद सम्भालो, जगतपाल हे स्वामी ॥
बल बुद्धि विवेक के दाता, अशरण शरण प्रदाता ।
आर्त भाव से शरण तुम्हारी आया हूं प्रभु स्वामी ॥
जगत नियन्ता होकर के भी, मूलाधार निवासी हो तुम।
जाग्रत होकर कृपाशील हो, दया करो हे स्वामी ॥
ऋद्धि सिद्धि के दाता तुम हो, कष्ट मिटावन हारे ।
कष्ट हरो और बंधन काटो, प्रणतपाल हे स्वामी ॥
मोह जाल में फस कर प्रभुजी, आया शरण तुम्हारी ।
पाश मुक्त हो आऊं हरि हर लोक तुम्हारे स्वामी ॥
तीर्थ शिवोम् विनती कर जोड़े, दया दृष्टि अब राखो ।
शरण पड़े की बांह गहो अब, कृपावन्त हे स्वामी ॥

(२) आखों का तारा न मिला (उर्दू)

हम किनारे आ गए, लेकिन किनारा न मिला।
वह तो किनारे हो गए, हमको सहारा न मिला ॥
उनसे बिछड़े मुद्दतें बीतीं, मगर वह सित्मगर ।
बारहा वायदे किये, फिर भी दो बार न मिला ॥
राह में पलकें बिछाए, बीतती जाती उमर ।
हम तड़पते रह गए, नूरे सितारा न मिला ॥
राम के दीदार बिन, हे जिंदगी में दम नहीं।
कोशिश बेकार सब, दिलबर हमार न मिला ॥
इलतिजा शिवोम् की, रहबर मिले, रस्ता मिले।
अब तल्क मुझ को मेरा, आखों का तारा न मिला ॥

(३) घट में दीपक जलता है

हर घर हर दर, घट में दीपक जलता है।
अंधा दीपक देख नं पावे, घट घट दीपक जलता है ॥
न कुछ करना, न कुछ कहना, न कुछ सुनना है जग में।
जीते जी बस मर रहना है, घट में दीपक जलता है ॥
झूठी माया, झूठी काया, झूठा है संसार बना।
माया का आवरण त्याग तू, घट में दीपक जलता है ॥
लोग कहे प्रभु दूर बसत है, पाना उसको सरल नहीं।
वह परकाशित जीव के अंदर, घट में दीपक जलता है।
ज्ञानी ध्यानी भक्त कहावे, प्रभु नजर नहीं आवे है।
अन्दर होकर बाहर खोजे, घट में दीपक जलता है ॥
कहे शिवोम् देख तू अन्दर, बाहर खोजे क्यों उसको।
अन्दर है वह, अन्दर है वह, घट में दीपक जलता है ॥

(४) तेरा जीवन बीता जाए

तेरा जीवन बीता जाए, तू राम सिमर ले भाई।
तू जग में क्यों भरमावे, तेरा अन्त समय नियराई ॥
लोभ मोह में जनम गंवायो, माया भ्रम लिपटाना।
भाँति भाँति के स्वागं बनाए, अन्त छोड़ सब जाई ॥
अन्त समय जब यम घेरेगा, कहत करन नहीं आवे।
अब से राम सिमर तू प्राणी, क्यों विषयन लिपटाई ॥
सुख के कारण, दुःख को धायो, न मन तृप्त भयो।
अब तो सोच समझ ले भाई, जनम अमोलक जाई ॥
तीर्थ शिवोम् अब क्या पछतावे, बीत गई सो बीती।
बाकी रही, उसकी सुध ले तू, सम्भल जा मेरे भाई ॥

(५)सद्गुरु दिया दिखाय

जो देखन में नहीं आए, सो सद्गुरु दिया दिखाय ।
रोम रोम में प्रकट हुआ वह, अन्तर में दर्शाए ॥
राम मेरा सर्वत्र समाना, पर दीखे घट माहीं।
ऐसा बाज सद्गुरु ने मारा, प्रेम हृदय बिंध जाय ॥
अन्दर बाहर राम ही दीखत, राम बिना कुछ नाहीं ।
राम ही सर्व समाना जग में, घट में राम समाय ॥
बिन पावों के कैसे चलता, नैनन के बिन देखे ।
गुरु कृपा से भेद प्रगट सब, व्यापक राम दिखाय ॥
अनुप मनोहर रूप है न्यारा, उपमा रहित अपारा।
घट घट व्यापक साईं मेरा, कहत सुनन नहीं आय ॥
तीर्थ शिवोम् कृपा भई ऐसी, गुरु मारग प्रगटाय।
मन में सुख आनन्द अनन्ता, पल पल अनुभव आय ॥

(६)सद्गुरु लियो उबार

सद्गुरु लियो उबार, मुझ भव जल बहती को।
भव अग्नि में तड़प रही थी, आशाओं में फड़क रही थी ।
विषयों में मैं जकड़ रही थी, बचाया दुःख सुख सहती को।
काम क्रोध वश पड़ी हुई थी, लोभ मोह में खड़ी हुई थी ।
जग में नाओ अड़ी हुई थी, निकाला भंवरे खाती को ।
मारग भटकी, राह में अटकी, दिशाहीन मैं रही लटकती ॥
घाट की रही, न मैं नहीं घर की, सहारा पीड़ा सहती को।
तीर्थ शिवोम् माया गई ऐसी, न दुःख रहा न विपदा वैसी ॥
रोग मोह और ममता कैसी, बचाया विपदा सहती को॥

(७)गुरु बिन विपदा बहुत सही

गुरु बिन विपदा बहुत सही ।
हरि के रंग है मन नहीं राता, मानत नाहीं कही ॥
सत संगत हरि सुमिरन नाहीं, विषय भोग रत रहती ।
मोह क्रोध अभिमान जनित दुःख, अब नहीं जात सही ॥
गुरु को छोड़ विषय को धायो, पाप ही पाप कमाया ।
मन मलीन औ मैली कफनी, नित ही करत रही ॥
सदगुरु कृपा करो अब ऐसी, तीर्थ शिवोम् कृतारथ ।
मेल मिलावो अब तो हरि सों, द्वारे आन पड़ी ॥

(८)ते किदरे पकड़ न आवे ओह (पंजाबी)

बेपरवाह नाल लाई यारी, ते किदरे नजर न आवे ओह ।
ढूँड ढूँड के मैं थक हारी, ते किदरे पकड़ न आवे ओह ॥
सास्तर वेद किताबां आखण, समने थाई रहन्दा ए।
पर ओह मैं नू लबदा नाहीं, किदरे पकड़ न आवे ओह ॥
हर घर बिच हर दर बिच वसदा, पर ओह दिसदा मूल नहीं ।
सदगुरु मेहर करे तद तकते, किदरे पकड़ न आवे ओह ॥
ओहले बैह बैह सैंता- मारे, लुकया आपी बैठा ए।
जगतों मुंह मोड़ा न तद तक, किदरे पकड़ न आवे ओह ॥
शाहरग राही ओहदे घर नूं, रस्ता सदगुरु तो मिलद ।
मुरशद पीर पुकारन इक गल, किदरे पकड़ न आवे ओह ॥
तीर्थ शिवोम् मेहर गुरुवर दी, लुकया रब्ब करे हाजिर ।
होर राह सब हार के कहन्दे, किदरे पकड़ न आवे ओह ॥

(९)बिरथा जीवन भजन बिना

बिरथा जीवन भजन बिना, अन्त समय घबराये ।
प्रेम हीन मन लेकर प्राणी, प्रभु के सन्मुख जाये ॥
प्रीतम बिन जीवन है ऐसा, जैसे पशु समाना।
प्रभु हृदय में परगट नाहीं, जगत त्याग उठि जाये ॥
आसक्ति में जनम गंवायो, आगे यम दिखलाये।
धन दारा औ राज के कारण, माथे बोझ लदाये ॥
प्रीतम छोड़ विषय मन दीना, पाप बीज तू बोये ।
अब नहीं समझा रे मन मूरख, बीता जीवन पछताये ।
तीर्थ शिवोम् चौरासी भटके, सागर डूबा जाये ॥
हरि सों प्रेम लगा मन माहीं, भोगन क्यों लपटाये ॥

(१०)अब तक राम न आए।

मैं कब की राह निहारुं, अब तक राम न आए।
मैं खोले बन्द किवाड़े, अब तक राम न आए ।
हिरदय मेरा तड़प रहा है, चैन मुझे पल भर नहीं आए।
मन है हरदम राम पुकारे, नैन नहीं दर्शन पाए ।
पलक बिछाए मारग देखूं, मारग सुथरा पुष्प बिछाए ॥
हार चुकी हूं धीरज टूटा अजहूं राम नहीं आए।
दाएं बाएं आगे पीछे, दर्शन बाझों मन तड़पाए ॥
सखियां मेरा मुंह चिढ़ाएं, राम दर्शन नहीं पाए ॥
सदगुरु कृपा करो दुखिया पर, मारग नहीं राम का पाए ।
अन्तर्दृष्टि खोलो मेरी, अन्दर बाहर राम दर्शाए ॥
सीता शक्ति क्रियावती हो, मन निर्मल हो शुद्धि पाए ।
सीता राम जगत में देखूं, राम राम मेरे मन भाए ॥
तीर्थ शिवोम् राम की शक्ति, शब्द सुनू और नैनन पेखूं ।
राम बिना कुछ भाता नाहीं, प्रकट राम मन पाए ॥

(११) कैसे नाम ध्याऊं

मन बुद्धि दोनों चंचल हैं, कैसे नाम ध्याऊं ।
वृत्ति इधर उधर भटकत है, भक्ति क्योंकर पाऊं ॥
निराधार, अबलम्ब न कोई, गुप्त हुआ तू बैठा ।
जौ देखों तौ धीरज पाऊं, कैसे नाम कमाऊं ॥
घट घट रमता साईं मेरा, पर मैं देख न पाती ।
घट में देखूं तब में जानूं, कैसे उसे मनाऊं ॥
त्रिगुणातीत गुणी मेरा प्रीतम, मैं सब अवगुण हारी। मैं
गुण अन्दर, है वह बाहर, कैसे उसको पाऊं ॥
यह जग माया भर्म भुलाना, मोर तोर में उलझा ।
जब लगि मन अभिमान युक्त है, कैसे दर्शन पाऊं ॥
प्रभु कृपालु दयालु अनन्ता, दया अहैतुक करता।
कृपा उसकी उपलब्ध तभी तो, हरि का नाम ध्याऊं ॥
मुझ पर कृपा करो हे सदगुरु, तीर्थ शिवोम् की विनति ।
नाम जहाज मिले तब किरपा, भवसागर तरि जाऊं ॥

(१२) मेरा मन उरिझि रह्यो

मेरा मन उरिझि रह्यो जग माहीं ।
अहनिंसि भाजे भोग विषयन में, लगत भजन नाहीं ॥
भोग लोभ में रमा रहा मन, विषय वासना भूखा ।
अब लगि तृष्णा तृप्त भई नहीं, फिर भी मानत नाहीं ॥
कोहलू बैल बना जग में वह, व्यर्थ करे जीवन को ।
धन दारा और मोह समुन्दर, डूबत है मन ताहीं ॥
जतन अनेक मैं करि करि थाकी, मन समझाय हारी ।
योग भक्ति तप संयम कीना, वासना त्यागत नाहीं ॥
तीर्थ शिवोम् कृपा गुरुवर की, काटे जम की फांसी ।
मन निर्मल अन्तर्मुख ऐसा, आवन जावन नाहीं ॥

(१३) कौन कमाई नर कीनी

मानुष देह दया कर दीनी, कौन कमाई न कीनी ।
काम क्रोध और लोभ न छोड़ा, मग्न वासना जलता है ॥
जगत के पीछे अंधा होकर, कौन कमाई नर कीनी ।
गर्व में रमता, काल ने घेरा, भोगों में मन करता है ॥
विषयों में आसक्त चित्त हो, कौन कमाई नर कीनी ।
झूठे सुख को सुख कर माने, भोगों के हित मरता है ।
भोग भोगता दुखी हुआ मन, कौन कमाई नर कीनी ॥
मन में अब तू समझ प्यारे, समय नष्ट तू करता है ।
जग हेतु वृत्ति अपना कर, कौन कमाई नर कीनी ॥
कितना ही समझाय थका मैं, पर तू समझ न पाता है।
मन अपने के पीछे लग कर, कौन कमाई नर कीनी ॥
काल चक्र में पड़ा हुआ तू, बार बार क्यों मरता है।
बुद्धि भ्रम मन में अपना कर, कौन कमाई नर कीनी ॥
तीर्थ शिवोम् गुरु चरण पकड़कर, ध्यान भजन सेव लेकर।
अब तक केवल समय गंवाया, कौन कमाई नर कीनी ॥

(१४) एक ही एक

एक ही एक है, एक अनेक है, जित देखों तहां एक ही एक है।
जहां माया तहां एक अनेक है, माया रहित तब एक ही एक है ॥
एक ही एक का सकल पसारा, एक ही एक है अपरम्पारा।
एक ही ब्रह्म एक ही जीवा, एक ही माया एक ही शीवा ॥
एक ही करता अत्याचारा, एक ही सहता शोषण सारा ।
एक ही दृष्य वही है द्रष्टा, करता भरता हरता हारा ॥
एक ही है माया फैलाता, एक ही है माया में आता ।
भक्ति साधन ही करता, एक ही है फिर मुक्ति पाता ॥
एक ही पुरुष एक ही नारी, वही मीठा और वही है खारी ।
वही है बैठा लाए तारी, उसी एक की बुद्धि मारी ॥
एक बना है चंचल मनवा, कहीं लुहार चलावे घनवा ।
एक बना पनवारी पनवा, शाल लपेटे कोई तनवा ॥
पांचों तत्व एक ही धारा, एक ही मन बुद्धि हंकारा ।
एक अनेक रूप है धारा, फिर भी एक सभी से न्यारा ॥
एक बना है सदगुरु देवा, एक बना है सन्त विदेहा ।
तीर्थ शिवोम् एक ही देखा, एक बिना नहीं दूजा पेखा ॥

(१५) इरादा क्या है बता तू अपना

कहां से आया? कहां है जाना, पता ठिकाना बता तू अपना ।
कहां से लाता, कहां है देता, कहां खजाना बता तू अपना ॥
ठिकाने जिसका तू गर्व करता, न साथ जाय, यहीं रहेगा।
न साथ लाया, न साथ जाय, इरादा क्या है बता तू अपना ॥
कपट का जीवन है चार दिन का, तेरी है मरजी जो चाहे कर ले।
वही है मंजिल जहां है जाना, कहां है घर दर बता तू अपना ॥
है काल तेरे खड़ा है सिर पर, मुकाम वीरान होगा तेरा ।
हैं लोग जाते सभी वहीं पर, खयाल क्या है, बता तू अपना ॥
की किरपा जो जीव पाते, शिवोम् होते सुखी वही है।
सुखी है होना, या दुख को पाना, खयाल दिल का, बता तू अपना ॥

(१६)रिक्त कोई घट नहीं

सब का पति एक परमेश्वर, रिक्त कोई घट नहीं ।
कड़े नियोग सो पतिव्रता है, तामें जाय समाहीं ॥
सभी जगह व्यापक परमेश्वर, किसी जगह उपलब्ध नहीं।
खोज खोज में हारी जग में, ठौर ठिकाना पता नहीं ।
अन्तर में परमेश्वर मेरा, हर घट में व्यापक है वह ।
बाहर खोजे राम मिले न, कृपा बिना उपलब्ध नहीं ॥
जैसे अनि छिपी काष्ठ में, वैसे राम हृदय अन्दर ।
अन्दर खोजे प्रभु मिले तब, बाहर खोजे राम नहीं ॥
प्रकट राम अन्तर में होता, बाहर सभी जगह दिखता।
जब तक अन्दर नहीं दिखे, तब बाहर दिखते राम नहीं ॥
मारग प्रभु मिलन को जाता, मन के अन्दर होकर है।
हृदय युक्त हो श्री चरणों में, राम प्रकट हिरदय माहीं ॥
तीर्थ शिवोम् लीन चरणों में, जब मानव खोता मैं को।
राम मिले तब मन ही माहीं, नहीं तो राम मिले नाहीं ॥

(१७).....राम बिना

विरहणी ज्यों तड़पत है पी बिन, वैसे मैं भी राम बिना ।
कल न पड़त और नींद न आवत, शान्त नहीं मन राम बिना ॥
सुनत पुकार पी घर आवत है, प्यास बुझत है मन की ।
करत पुकार में सुनन न हारा, तृषा बुझे क्यों राम बिना ॥
कब से बिछुड़ी प्रभु चरणों से, रहा याद भी न मुझको ।
ऐसी लिस हुई जग माहीं, पर सुख नाहीं राम बिना ॥
तब जागी जब दुखी हुआ मन, आर्त हो गया विषयों से ।
सुख तो मेरे प्रियतम के घर, नाहीं सुख श्री राम बिना ॥
रात व्यतीत वियोग की कब हो, प्रातःकाल का रस्ता देखूं ।
चारों दिशा अंधेरी दीखत, तम ही तम है राम बिना ॥
सदगुरु देव सम्भालो मुझको, बिलख बिलख कर रोती हूँ मैं ।
अब तो चैन हृदय नहीं आवत, दर्शन पाए राम बिना।
विष्णु तीर्थ प्रभु कृपा करो अब, तीर्थ शिवोम् है चरण पड़ा।
जगत अनोखा रूप दिखाया, जीवन व्यर्थ है राम बिना ।

(१८) सदगुरु सहज अनन्ता

सदगुरु देख्या सहज अनन्ता ।
सहज वृत्ति सहजे मन बुद्धि, सहज पाया भगन्ता ॥
ध्यान करे न, सहजे होवे, अन्तर्लीन अवस्था ।
मन न रोके, सहजे रुकता, पायो ब्रह्म अनन्ता ॥
दया दृष्टि जाके उर माहीं, कृपा करे बिन हेतु ।
अन्तर्मुखी शक्ति हो जाग्रत, मन में प्रेम अनन्ता ॥
ज्ञान भक्ति की क्रिया अलौकिक, सदगुरु परिचय देती ।
योग अखण्ड स्वरूप है सदगुरु, गहर गम्भीर अनन्ता ॥
विष्णु तीर्थ प्रभु तुमरी कृपा से, शिष्य प्रेम सुख पाता ।
तीर्थ शिवोम् मस्त मन ही मन, सदगुरु सहज अनन्ता ॥

(१९) प्रभु प्रेम में रंग दीना

सदगुरु किरपा करी अलौकिक, अपने रंग में रंग लीना ।
रंग गहरा है, छूटत नाहीं, प्रभु प्रेम में रंग दीना ॥
सदगुरु देव की शक्ति न्यारी, मन में प्रभु प्रेम भर दे ।
हिरदय रंग पिचकारी मारी, अन्तर बाहर रंग दीना ॥
मस्ती ऐसी छाई मन में, नशा निरन्तर रहता है ।
जग सारा रंगीन दिखे अब, दृष्टि में रंग भर दीना ॥
मन में थिरता आई ऐसी, विषयों में मन जात नहीं ।
अन्दर ही आनन्द मगन है, अन्तर प्रेम से भर दीना ॥
रंगारंग के नाद प्रकट अब, सहज स्वाभाविक होता है ।
भांति भांति के दृश्य प्रकाशित, क्रियाशील सदगुरु कीना ॥
खोज रहा प्रभु को बाहर में, अन्तर में परकाशित प्रीतम ।
अब आनन्द में गोते खाता, सुख हिरदय में भर दीना ॥
विष्णु तीर्थ प्रभु नज़र कृपा की, गुरु शक्ति परकाशित है ।
तीर्थ शिवोम् पड़ा चरणों में, मन तो मेरा रंग दीना ॥

(२०) गति समझ न आवे

कुदरत की गति समझ न आवे ।
कब नीचे को ऊपर कर दे, ऊपर को पटकावे ॥
हृष्ट पुष्ट रोगी हुई जावे, रोग निरोग कमावे ।
कब राजा को रंक करे वह, रंक राज को पावे ॥
ताकि कृपा उच्च श्रृंखला, कहीं समुद्र गहरावे ।
करते रमण पक्षी आकाशे, मछ गहरा जल पावे ॥
भक्त के मन में काम वासना, फिर पीछे पछतावे ।
दुष्ट है बनता भक्त प्रभु का, गीत हरि के गावे ॥
संसारी की वृत्ति जलचर, चंचल होती जावे ।
जीव पड़ा माया के भ्रम में, भव में गोते खावे ॥
श्वास खींचता योगाभ्यासी, फिर भी लक्ष्य न पावे ।
अत्याचारी और व्यभिचारी, भक्त रूप हुई जावे ॥
जगत पहेली राम ही जाने, क्या से क्या करवावे ।
जीव बेचारा, को वश नाहीं, वही करता, सो करावे ॥
विष्णु तीर्थ प्रभु तुम ही जानो, मुझे समझ नहीं आवे ।
तीर्थ शिवोम् पड़ा चरणों में, गुरु शक्ति करवावे ॥

(२१) मन चंचलता त्यागे साधो

मन चंचलता त्यागे साधो, तभी परम गति पावेगा ।
जगत से न्यारा है परमेश्वर, जग में क्योंकर पावेगा ॥
चंचल मन हो जग में खोजे, पर है नाम रूप प्रकटाता ।
अन्तर्मुखी वृत्ति अपना कर, पार ब्रह्म को पावेगा ॥
पार ब्रह्म की ऐसी गति है, जहां देव नहीं देवी ।
पैगम्बर अवतार न कोई, धूप छांव नहीं पावेगा ॥
जगत विषय है चंचलता का, ब्रह्म जगत में नाहीं है ।
जगत विलीन भया नहीं तब तक, कैसे ईश्वर पावेगा ॥
मन की थिरता और निर्मलता, प्रभु मिलन का कारण है ।
मन को शुद्ध किए बिन कैसे, परम गति तू पावेगा ॥
जग में तुझको जो भी दिखता, नाम रूप विस्तार किया ।
गुरु शक्ति की कृपा से ही तू, भेद ब्रह्म का पावेगा ॥॥
विष्णु तीर्थ प्रभु ब्रह्म रूप हो, चंचलता मन में नाहीं ।
तुमरी दया कृपा से ही तो, तीर्थ शिवोम् भी पावेगा ॥

(२२)काल पकड़ से बच पाया

पकड़ काल की बड़ी विस्तरित, कोई देश न बच पाया ।
जो आया सो गया जगत से, कोई न लीक से हट पाया ॥
जीव, वस्तु और 'सकल पदार्थ, सभी मृत्यु के मुंह में है।
सभी जगह वह विद्यमान है, कोई न उससे बच पाया ॥
सारा जगत काल के अन्दर, बाहर काल नहीं कोय ।
आत्म तत्व ही एक पदार्थ, जो हे काल से बच पाया ॥
जो भी जग में पैदा होता, काल उसे खा जाता है।
जग का जो आधार चेतना, वही काल से बच पाया ॥
आत्म भाव जगत में रखता, बचना चाहे काल से तू ।
यह तो सम्भव कैसे होगा, जगत न काल से बच पाया ॥
आत्म भाव आत्म में रखो, चेतन भाव धारण कर लो।
तभी काल कुछ कर न पावे, कोई न काल से बच पाया ॥
आत्म भाव को धारण करना, कार्य यह इतना सरल नहीं।
सद्गुरु कृपा से ही सम्भव हो, तभी जीव है बच पाया ॥
तीर्थ शिवोम् अब कृपा करो प्रभु, शरण तुम्हारी मैं आया।
तुमरी कृपा बिना नहीं मानव, काल पकड़ से बच पाया ॥

(२३)मेरो मन अमी रस पी मतवाला

मेरो मन अमी रस पी मतवाला ।
उन्मनि हो कर चढ़ता ऊपर, आनन्द के घर वाला ॥
स्थूल सूक्ष्म और कारण तीनों, लोक भया उजियारा ।
ग्यान का गुड़ और ध्यान का महुआ, करता रस मतवाला ॥
गुरु शक्ति अन्तर्मुख होती, धरती ज्ञान अकारा ।
ज्ञानाग्नि में तपित हुआ रस, पीकर बन मतवाला ॥
उदय अस्त संकल्पहीन मन, पावे रूप अपारा।
प्रेम मगन हो रमण अनन्दा, होवे मन मतवाला ॥
पाया रस विश्राम चरम तब, चिदाकाश की अग्नि ।
जल भुन गया सकल संसारा, पी पी हो मतवाला ॥
यह रस प्राप्त हुआ सद्गुरु से, सहज हुआ उजियारा ।
गुरु कृपा से जाग्रत शक्ति, करती मन मतवाला ॥
विष्णु तीर्थ प्रभु जाग्रत होकर, मिटा सकल अंधियारा ।
तीर्थ शिवोम् आनन्दित ऐसा हुआ है मन मतवाला ॥

(२४)राम ही राम रटे मन मेरा

राम ही राम रटे मन मेरा, राम ही राम रटे रे।
विषयन ओर जात मन नाहीं, नाम से नाहीं हटे रे ॥
नाम का प्याला पी मतवाला, नाम हृदय से छूटत नाहीं ।
अब तो राम नाम उर लागा, प्रेम न मन में घटे रे ॥
राम की सेवा, राम की भक्ति, राम ही मन में बसे रे।
राम नाम की तारी लागी, कर्म के लेख फटे रे ॥
राम नाम बिन जीवन नाहीं, राम ही मेरा अधारा ।
राम हृदय घर कीया अन्दर, नाम न मन से हटे रे ॥
जगत में राम नाम को पेखूं, राम ही जगत पसारा ।
राम बिना जग में कुछ नाहीं, व्यापक राम बसे रे ॥
विष्णु तीर्थ प्रभु राम रूप हैं, करत राम सम सेवा ।
तीर्थ शिवोम् ऐसा मन दीजो, राम ही राम रटे रे ॥

(२५)नी मेरी सहेलियो (पंजाबी)

मैं, मेरा तेरा पहचानियां, हुन में काहनूं डरसां ।
डर-डर बिच मिलायया, हुन मैं बेडर बनया नी मेरी सहेलियो ॥
जद तक मेरा तेरा कीता, जनम मरण दा दारु पीता।
आया गया मैं इक कर लीता, मन नू मन दे बिच मैं दीता नी मेरी सहेलियो ॥
जद तक डर मेरे सी अन्दर, ऊंच नीच दा बनया खण्डर ।
पशु बनया ते दुःख में पाया, मेरे मन बिच सदा बवन्दर नी मेरी सहेलियो ॥
मैं ते मेरी, जद तो खोई, दूर मुसीबत सारी होई ।
होर न दिस्से में नूं कोई, राम डिटठा अन्दर हर कोईनी मेरी सहेलियो ।
तीर्थ शिवोम् प्रीतम घर आया, जनम जनम दा दुख मिटाया ।
आपा खो के नाम कमाया, ओहदे नाल मिलावा पायया नी मेरी सहेलियो ॥

(२६)... गुरु याद आए

प्रभु भूल जाए चाहे, गुरु न भुलाए ।
प्रतिक्षण प्रति पल गुरु याद आए।
जगत में भेजे प्रभु, सुखी दुःखी जीव होता ।
गुरु जीव मुक्त करे, बंधन छुड़ाए ।
हरि ने पटक दियो, अंध कूप माहीं मुझे।
गुरु मोहे खींच लीनों, बाहर कड़ाए ।
काम, क्रोध लोभ मोह, जीव को पकड़ लीनो।
गुरु देव दया कर, पकड़ छुड़ाए ॥
ममता का जाल रचा, प्रभु जाल बीच डाला।
गुरु जाल काट दीनो, ममता हटाए ॥
प्रभु भोग युक्त करि, रोग में फसाए दीनो ।
गुरु भोग मुक्त किया, रोग को हटाए ।
तीर्थ शिवोम् गुरु हिरदय में धार रख।
प्रतिक्षण प्रति पल गुरु याद आए ॥

(२७)....चढ़ना आसान नहीं

साधन पेड़ अति ही ऊंचा, रपटीला कंटीला है।
ता का फल अत्यन्त मधुर है, पर चढ़ना आसान नहीं ॥
मीठे फल का सेवन कर ले, प्रेम मगन वह ही होता ।
कैसे पाऊं कैस खाऊं, पर चढ़ना आसान नहीं ॥
पेड़ है सीधा मोटा लम्बा, खाने को मन बहुत करे ।
कैसे ऊपर चढ़ पाऊंगा, पर चढ़ना आसान नहीं ॥
साधन मार्ग कठिन है भारी, छुरे धार पर चलना है।
करते यत्न अनेकों साधक, पर चढ़ना आसान नहीं ॥
गुरु कृपा बिन इस मारग पर, बढ़ पाना है कठिन बड़ा ।
चाहे यत्न करे भी कितना, पर चढ़ना आसान नहीं ।
तीर्थ शिवोम् कृपा से साधे, कठिन विषय अध्यात्म का ।
नहीं तो साधन करिकरि हारे, पर चढ़ना आसान नहीं ॥

(२८)परदा उठा के देख जरा (उर्दू)

परदा उठा के देख जरा, यार सामने है।
परदा नशीं तो आप बना, यार सामने है।
दिल्वर निहां है हर जगह, पर दीखता नहीं।
नापाक आप ही बना, पर यार सामने है।
रौशन चिराग है तेरे अन्दर वजूद के।
नज़रे तलाश और जा, पर यार सामने है।
फिकरे तलाश, मुर्शिदे कामिल बिना नहीं।
खुद ही बना नकाब तू, पर यार सामने है।
दौलत शिवोम् जिन्दगी, जाया न कीजिए।
तू देखता नहीं उसे, पर यार सामने है।

(२९)आतम मारग, खुल जाय

जो अलख बना जग माहीं, सो सद्गुरु दियो लखाय।
जो कहन वेद में, नाहीं, सो सद्गुरु दियो बताय ॥
घट घट माहीं रहता प्रियतम, पर देखत कहीं न आय।
ऐसी कृपा गुरुवर ने कीनी, जो कण कणा दियो जनाव ॥
परम प्रकाशक परम ज्ञानघन, आलोकित है जग उससे।
स्वयं छुपा तम के अन्दर है, सो तम को दियो हटाय ॥
अगम अपार अगोचर सांई, मन बुद्धि है पकड़ न पाती।
सीमित जीव असीम प्रभु है, सो बुद्धि में प्रकटाय ॥
तिल में तेल काष्ठ में अग्नि, तैसे राम सर्वत्र समाया।
राम प्रकाशित जग में कीनों, सो दियो सभी दर्शाय ॥
सद्गुरु तत्व विचित्र अलौकिक, करे अन्तर परकाशित।
दूर करो आवरण चित्त का, अन्दर में ही प्रकटाय ॥
करो अनुग्रह मुझ पर भारी, चरण शिवोम् पड़ा है।
क्षमा करो सब अवगुण मोरे, आतम मारग खुल जाय ॥

(३०) पी घर में जाना

पीहर छोड़ पी के घर जाना, री मेरी सजनी ।
पी का देश अलौकिक न्यारा, री मेरी सजनी ॥
तहां सूरज न चन्द न पानी, न है वायु बहती ।
शान्त अशान्त से देश अछूता, री मेरी सजनी ॥
न कोई जाए न आए वहां से, न संदेश पहुंचाए ।
गुण और कर्म है व्यापत नाहीं, री मेरी सजनी ॥
जावत चाहीं, पर जाय न पाऊं, नहीं पंथ पथ पाऊं ।
सद्गुरु मिले तो पथ समझाए, री मेरी सजनी ॥
तीर्थ शिवोम् पी घर में जाना, नहीं जगत भरमाए ।
गुरु मारग पाऊं तो जाऊं, री मेरी सजनी ॥

(३१) राम की लीला पेखूं

अन्तर राम की लीला पेखूं ।
राम की लीला अजब अलौकिक, अचरज कर मैं पेखूं ॥
न कोई करता, हरता, भरता, न गाता हर्षता ।
सभी क्रियाएं बिन करता के, विस्मित होय देखूं ॥
बिना बजाए वाद्य अनेकों, बजत जिया हर्षाए ।
रंगा रंग परकाश आनन्दित, होकर उसको देखूं ॥
शक्ति अन्तर्मुखी प्रवाहित होकर ऊपर चढ़ती ॥
मन उन्मुक्त क्रियाएं करती, द्रष्टा होकर देखूं ॥
पाप राशि सब जलती जाए, जैसे घास का पूला ।
चित्त शुद्धि की अजब क्रियाएं, शिथिल होय कर देखूं ॥
अन्तर ही से ज्ञान उपजता, अन्तर में सुख पाता ।
अंतर में आनन्दित होता, अन्तर में ही देखूं ॥
जिस शक्ति को अपना समझा, शिव की शक्ति है वह ।
अनुभव भिन्न कराती जाग्रत, भिन्न उसे मैं देखूं ॥
राम की शक्ति गुरु शक्ति है, कृपा शिष्य पर करती ।
अन्तर्मुखी प्रवाहित उसको, होय समर्पित देखूं ॥
आत्मामुखी सुजाग्रत शक्ति, कृपा करो गुरुदेवा ।
तीर्थ शिवोम् विनय चरणों में, लीला तुमरी पेखूं ॥

(३२)मैं विषयों के रंगराता

मैं विषयों के रंग राता ।
क्रोध लोभ छूटत नहीं मो से, काम से न घबराता ॥
अंकार में डूबत जियरा, भव जल बहता जाए।
सुन लो मेरी पुकार रामजी, कृपा न क्यों बरसाता ॥
यत्न करूं छूटन का जितना, बंधन बढ़ता जाए।
अब तो आस भरोसा तुमरा, धीरज छूटत जाता ॥
डूबत नाव मेरी अब भव में, मुझे बचा लो स्वामी ।
वेग करो प्रभु आवन को अब, दास है डूबा जाता ॥
तीर्थ शिवोम् प्रभु विरद निहारो, आया शरण तुम्हारी ।
नहीं तो जीवन बीतत जाए, विषयों के रंग राता ॥

(३३)मैं ढूंढया सांई नूं (पंजाबी)

मैं ढूंढया सांई नूं, जग बिच समनी थांई ।
दिलबर जग बिच भरया होया, वेखण वाली अख लोड़ींदी ॥
सज्जे खब्बे ते उत्ते चलले, केहड़ी थां जित्थे ओह नाहीं ।
जिन्हीं राह मुरशिद न मिल्या, लभदे फिरदे पये भटकदे ॥
जानन ओहनूं दूर ओह बोहता, दिसदा नहीं किदरे बी बांई।
मंदिर जा के टल वजावन, करदे जतन अनेकां ॥
साह रोकन ते करन इबादत, करदे थाई थाई ।
नूर साईं दा भरया होया, तिल्ली लोकी चारे पासीं ॥
मुरशिद बिन न लम्भे दिलबर, ढूंढो ओहनूं समनी थांई,
तीर्थ शिवोम् दिलबर वेखण नूं, आया गुरु दी चरनीं।
मेहर हजूर दी मेरे उत्ते, वेखां समनीं थांई ॥

(३४)गुरु अवतार धरा मन अन्दर

गुरु अवतार धरा मन अन्दर, आनन्द भया मन आजे ।
दृष्टि बदल गई अब ऐसी, नाद अनाहत बाजे ॥
मैं तू भाव मिटा अब ऐसा, प्रेम सभी में व्यापे ।
नशा निरन्तर चढ़ता रहता, राम नाम सब साजे ॥
गुरु शक्ति की चेतन लीला, चेतन ही किरियाएं।
भक्ति भावना, योग साधना, स्वयं सिद्ध हुई आजे ॥
प्राणायाम अनाहत किरिया, राग रंग बहु बाजे ।
भाँति भाँति के दृश्य प्रकाशित, प्रकट होत मन आजे ॥
प्रेम का बाण लगा उर अन्दर, प्रेम ही प्रेम समाया ।
प्रेम ही अन्दर, प्रेम ही बाहर, प्रेम रूप भया आजे ॥
तीर्थ शिवोम् बलिहारी जाऊं, जा गुरु किरिया कीनी ।
माया छूटी, जगत पसारा, हुआ मुक्त मन आजे ॥

(३५)मन तो साफ हुआ ही नहीं

तू देह को साफ करे फिरता, पर मन तो साफ हुआ ही नहीं।
तू ज्ञान का संचय करता है, पर अन्तर ज्ञान हुआ ही नहीं ॥
विषयों में निरन्तर भटक रहा, तू कैसे सुख को पावेगा ।
आनन्द विहीन हुआ फिरता, मन तेरा शुद्ध हुआ ही नहीं ॥
प्रभु प्रेम निरन्तर, नाम सिमर, प्यारा प्रीयतम या जावेगा।
बिन प्रेम दुखी हो विषयों में, अन्तर आनन्द लिया ही नहीं ॥
सुख बाहर खोज रहा जग में, पर सुख तो अन्दर मन के है।
जब तक विश्राम न मन पावे, तू सुख से सुखी हुआ ही नहीं ॥
अब छोड़ बखेड़े बाहर के, निर्मलता का साधन कर ले।
तब तक न सुख को पावेगा, जब तक विश्राम हुआ ही नहीं ॥
शिवोम् गुरु की शरण गहो, भव सागर पार उतर जाए।
जब तक जग में सुख खोज रहा, जग का निस्तार हुआ ही नहीं ॥

(३६) मोहपाश के बंधन में

हम मोह पाश के बंधन में, प्रभु प्रेम वाश में पड़े हुए।
प्रभु पाश मुक्ति का यत्न करें, हम प्रभु प्रेम में मुक्त हुए।
प्रेम प्रेम है जगत पुकारे, प्रेम मार्ग से सब ही न्यारे।
गुरु किरपा बिन प्रेम न होवे, भव बंधन में पड़े हुए।
नाम का नाता, प्रेम की डोरी, हरि छूटे क्यों फसे हुए।
हम मतवाले भोग मोह के, पग पग पल पल कसे हुए ॥
मैं और मेरा तेरा जग में, है अपने वश में किए हुए।
अंकार कट जाए तब ही, मोह पाश से हटे हुए ॥
तीर्थ शिवोम् शरण में आए, गुरु मारग अपनाए लिया।
विष्णु तीर्थ प्रभु बंधन काटो, द्वारे हैं हम पड़े हुए ॥

(३७) गुरु अमृत है चाख लिया

सो जग में क्यों भरमावे, जिन प्रेम अमी रस चख लिया।
विषयन में नाहीं डुलावे, जिन जग भोगों को भाख लिया ॥
जा के अन्तर प्रेम प्रकाशित, भोग मस्त मन नाहीं।
प्रेमानन्द मगन तब जियरा, प्रेम रसायण चाख लिया ॥
मन ही मन खोजत है पीको, बाहर भटकत नाहीं।
अन्तर ही आनन्द प्राप्त, रस अन्तर में चाख लिया ॥
अति बलवान पांच शत्रु हैं, गुरु किरपा सहारे।
सहज विजय पांचों पर पाई, जब रस मन में चाख लिया ॥
विष्णु तीर्थ प्रभु किरपा कीनी, तीर्थ शिवोम् आनन्दित।
अब मन जग में जात नहीं है, गुरु अमृत है चाख लिया ॥

(३८)बिन सूरज परकाश अपारा

बिन सूरज परकाश अपारा।

बिन बादल के बिजली चमके, बिन आकाश सितारा ॥

बिन समुद्र है लहर अनन्ता, बिन गायक संगीता ।

बिन पक्षी के कलरव होता, बोले शब्द अपारा ॥

जल बिन वर्षा है बहु भारी, जल थल करती सारा ।

बिना रूप के रूप है दीखत, बिन चमके चमकारा ॥

चिन्तन मनन वहां नहीं जावे, मन बुद्धि भी नाहीं ।

वर्ण न आश्रम जाति पांति नहीं, न कोई जाए विचारा ॥

बिन किरिया के किरिया होती, दिखते दृश्य अनेकों ।

कविता प्रकट बिना विद्वत्ता, शब्द बिना हुंकारा ॥

गुरु शक्ति अन्तर में करती, परगट सिद्ध क्रियाएं।

घट में अनायास घटती हैं, दे आनन्द अपारा ॥

क्रियाज्ञान और इच्छा होती, शक्ति त्रिविध स्वरूपा ।

निर्मल कर, मन की मलीनता, देती ज्ञान अपारा ॥

जाग्रत होकर गंग स्वरूपा, अन्तर्मुखी प्रवाहित ।

कर्म क्षीण कर, निर्मल करती, परमानन्द अपारा ॥

विष्णु तीर्थ प्रभु तीर्थ रूप हैं, शक्ति शुद्ध स्वरूपा ।

कृपावन्त हो शिष्य वर्ग पर, करते कृपा अपारा॥

सद्गुरु देव दया हो मुझ पर, शक्ति अन्तर जागे ।

अनुभव देती दिव्य अलौकिक, परगट अपरम्पारा ॥

तीर्थ शिवोम् गुरु मां शक्ति, जाग उठो अन्तर में ।

चित्त शुद्ध हो निर्मल मेरा, पाऊं ज्ञान अपारा ॥

(३९)गुरु शरणाई बहुत कठिन है।

गुरु शरणाई बहुत कठिन है ॥
जब लौ गुरु शरणागति नाहीं, आवागमन भटकता।
गुरु की शरण, जीव के मन में, कांटा नाहीं खटकता ॥
मुख से चरण शरण की बातें, अन्तर अहं समाया।
अहंकार के कारण जग में, बारम्बर भटकता ॥
जगत भोग भरमावे मन को, मारग से हट जावे।
भूला जीव जगत को धावे, भोगन माहिं लटकता ॥
पुरुषार्थ करता थक हारा, गुरु भेद न जाना। मन
लोभी विषयन का भूखा, जग में रहा लटकता ॥
विष्णु तीर्थ प्रभु किरपा करते, तब शरणाई आवे।
तीर्थ शिवोम् विनय यह मेरी, रहूं मैं नाहीं भटकता ॥

(४०)जोगन जाग री

जोगन जाग री क्या सोवे लम्बी तान के।
रजनी बीती भोर भई अब, क्यों सोवे आलस मान के ॥
जिन जागा तिन प्रीतम पाया, जिन सोया सो खोया।
क्यों सोवे गफलत की मारी, दूर पिया को मान के ॥
तू जाने तू जाग रही है, पर माया का सब धोका।
जब माया छूटे, जागे तब तू, प्रियतम सन्मुख मान के ॥
प्रियतम तेरा सोवत नाहीं, तब तू कैसे सोई।
आलस निद्रा त्याग उठो अब, कहना मेरा मान के ॥
विषय वासना गहरी निद्रा, बनी निरन्तर रहती।
फिर भी मन भोगों में रमता, विषयन में सुख मान के ॥
तेरा मन तो पी रंग राता, फिर तू क्यों सोय रही।
मुरु चरणों में लिपट रहे तू, जग को झूठा जान के ॥
तीर्थ शिवोम् विनती कर जोड़े, दूर करो भ्रम मोरा।
शरण में आया सदगुरु मोरे, प्रियतम प्यारा जान के ॥

(४१) जग में बार बार मैं आया

जग में बार बार मैं आया।
यहां प्रकट होकर के मैंने, घर ही नया बसाया ॥
पशु पक्षी और मानव दानव, रूप अनेकों धारे।
फिर भी इच्छा तृप्त हुई न, मुड़ मुड़ चक्कर खाया ॥
कभी रंक राजा बन आया, रूप कुरूप बनाया।
फिर भी इच्छा हटी न मन से, नया रूप धर आया ॥
आवागमन का चक्र अनूठा, जीव छूट न पाया।
यत्न करे छूटन का जितना, उलट घूमत आया ॥
प्रभु कृपा बिन जीव न होता, मुक्त त्याग कर माया।
आसक्ति के कारण जग में, बार बार वह आया ॥
गुरु शक्ति जब अन्दर जागे, तभी शुद्ध मन होता।
रहित वासना हो जब मनवा, जीव न जग में आया ॥
जाग उठो अन्दर माँ शक्ति, तीर्थ शिवोम् पुकारे।
कृपा प्राप्त तब श्री चरणों की, बहुरि जनम न पाया ॥

(४२) भेद ब्रह्म का पाता

यह जगत कूप अंधयारा, कहीं प्रकाश न आता।
मन लेत यही आधार, किरण कहीं देख न पाता ॥
माया मय है जगत पसारा, सूझ परत कछु नहीं।
सद्गुरु मणी दीप परकाशित, तभी भेद प्रकटाता ॥
प्रभु बसत है घट के अन्दर, जीव देख न पाता।
सद्गुरु पूरे किरपा कीनी, प्रकट तभी हो जाता ॥
प्रभु दीखत घट ही के भीतर, मन कपाट खुल जाता।
भ्रम का परदा हटे तभी तो, परकाशित हो जाता ॥
तीर्थ शिवोम् जगत बौराना, सद्गुरु एक ही मारग।
कृपा करे तब जीव मुक्त हो, भेद ब्रह्म का पाता ॥

(४३) जल सूख गया

विरह अगन लगी मन अंदर, विषयों का जल सूख गया ।
घोष वासना तृप्त हुई सब, अन्तर का मल सूख गया॥
जगत का रूप यथार्थ उभरा, नाम रूप सब भागे ।
योग वासना शान्त हो गई, मन का कल्मिश सूख गया ॥
विषयन में मन जात नहीं, आतम में तृप्ताना ।
आतम मस्त हुआ आतम में, जग का रस है सूख गया ॥
चिदाकाश में पक्षी उड़ता, मन में सुख उपजाता ।
बूंद मिल गई सागर में जब, कीचड़ सारा सूख गया ॥
चारों दिशा आनन्दित हैं अब, मस्ती है लहराती ।
झूम झूम उठता मन मेरा, जल है दुःख का सूख गया ॥
सभी ओर सुन्दरता विकसित, शिव स्वरूप जग सारा ।
सभी ओर प्रभु रूप दीखता, भ्रान्ति जल है सूख गया ॥
माया का आवरण हटा अब, मन निर्मलता पाए ।
चिन्मय शक्ति व्याप रही है, मृग तृष्णा जल सूख गया ॥
विष्णु तीर्थ प्रभु सर्व व्यापक, पाप क्षीण सब करता ।
तीर्थ शिवोम् आनन्दित मन में, जल विकार का सूख गया ॥

(४४) फिर क्यों नहीं इकरार है। (उर्दू)

आ रही बादे सबा, लाती पयामे प्यार है।
लाती पयामे प्यार में इनकार है इकरार है॥
अपने नकायस देखिए तो यार का इनकार है।
गर उसकी खूबी देखिए तो यार का इकरार है॥
अपने नकायस दूर कर, इखलाक को तू खूब कर ।
खूबी को खूबी में मिला, इकरार ही इकरार है ॥
मिलना जो चाहे यार को, शिवोम् उसको याद कर ।
दिल में न रख कोई गिला, फिर क्यों नहीं इकरार है॥

(४५) कदे न थकदी माया (पंजाबी)

मन थकया ते तन थकया, पर कदे न थकदी माया ।
चंचल मन हो, दौड़, दौड़ के, ऐंवे बकत गंवाया ॥
खान खेडण से सुख भोग तों, मन न कदे भरीन्दा ।
थक हार के, बैह के उठदा, जगत बल्लों भरमाया ॥
भोग भोग के पिण्डा थकया, होर होर रट लाई ।
मरने ताई ऐंवे करदा, जगत विषय मन भाया ॥
जम्मे, जम्म के भोग कमावे, ऐंवे ही मर जावे ।
आवन जान जगत विच बनया, पर कायम रहन्दी माया ॥
जदों मेहर मुरशिद दी होवे, तदों जीव छुटकारा ।
नहीं ते फेर फेर दुनिया विच, आवन जान बनाया ॥
मेहर जदों सदगुरु दी हासिल, रब्बी जीव करदा ए।
उलटा चाक कुदरत दा घुमदा, तो दूर होय सब माया ॥
तीर्थ शिवोम् किरपा मुरशिद दी, पाक साफ दिल होए ।
लोघा लेघ जगत दे विच्चों, बतन आपना पाया ॥

(४६) वाकी बलिहारी जाऊं

सुख दुःख जिन के एक है, वाकी बलिहारी जाऊं ।
भूख प्यास और सरदी गर्मी, जिन्हों एक कर मानी ॥
मित्र शत्रु में अन्तर नाही, वाकी बलिहारी जाऊं ।
अपना और पराया मेरा, मैं तू भाव नहीं है ॥
सभी जगह प्रभु एक दीखता, वाकी बलिहारी जाऊं ।
काम क्रोध और लोभ मोह हैं, जिनके मन में नाही ॥
तिनका मन निर्मल है बनया, वाकी बलिहारी जाऊं ।
प्रभु कृपा से दर्शन पाकर, जीव मुक्त है होता ॥
शिव स्वरूप भक्तों पर ऐसे, वाकी बलिहारी जाऊं ।
जिन के कृपा प्रसाद से शक्ति, अन्तर्मुखी प्रवाहित ॥
तिनके चरण कमल उर धारूं, वाकी बलिहारी जाऊं ।
विष्णुतीर्थ प्रभु राम रूप हैं, अन्तर लीला करते ॥
तीर्थ शिवोम् मगन है ऐसा, वाकी बलिहारी जाऊं ॥

(४७) प्रभु से राखो प्रीत

भाई रे, कठिन हरि से प्रीत ॥
हसरे मन निर्मल होता, यह है प्रभु की रीत ॥
जगत विषयों में थिरता नाहीं, ज्यों बालू की भीत ॥
जगत भोग हैं साथ न जाते, प्रभु ही है इक मीत ॥
प्रभु में मन राखे, हरि के ही गा गीत ॥
शिवोम् मन हरि चरणों में, प्रभु से राखो प्रीत ॥

(४८) किरपा सदगुरुदेव बिना

परदा कौन हटाए सदगुरु देव बिना ।
बिना सदगुरु नहीं, जाग्रत शक्ति, अन्तर्मुखी क्रियाएं ।
निर्मल मन सम्पादित नाहीं, किरिया सदगुरु देव बिना ॥
हो मलीन विषयों में रंगता, मन भोगों को धाय ।
अन्तर्मुखी, शुद्ध न होता, किरिया सदगुरुदेव बिना ॥
जगत दुःख का कारण माया, पड़ी चित्त है दूषित करती ।
मन से माया दूर न होती, किरिया सदगुरु देव बिना ॥
अंकार है अन्दर बैठा, शुद्ध कर्म न होने देता ।
अंकार का नाश नहीं है, किरिया सदगुरुदेव बिना ॥
तीर्थ शिवोम् दया गुरुदेवा, शरण पड़ा हूं तुमरी ।
कौन है विपदा काटन हारा, किरपा सदगुरुदेव बिना ॥

(४९) गुरु चरन ही एक सहारो

गुरु चरन ही एक सहारो
ठौर ठौर ही भटकत भटकत, आयो शरण तिहारो ॥
मो सम एक कुटिल के तारे, तुमरो कौन बिगारो ॥
कृपा सिंधु बिन्दु को काहे, करत नहीं उद्धारो ॥
तीर्थ शिवोम् विनती कर जोरे, लीजो मोहे उबारो ॥

(५०) राखो लाज हमारी

देव- गुरु, मैं शरण तिहारी ।
श्रेय प्रेय कुछ सूझत नाहीं, तुम ही मंगल कारी ॥
करनी करूं, अभिमान सहित मैं, दम्भ करूं अति भारी ।
शरण पड़ी, बांह पकरि उबारो, लाख जतन कर हारी ॥
दर्श दिखाओ प्रभु अन्तर में, विपद पड़ी अति भारी ।
तुमरी कृपा क्रिया ही मोरे, पाप मिटावन हारी ॥
सारा जग मैं खोजत हारी, होत निराशा भारी ।
अब तो बंधन काटो प्रभुजी, चरण पड़ी बनवारी ॥
होत दुखी नित मैं दुखियारी, तुमको देख न पाती ।
सद्गुरु रूप धरो मोरे प्रभुजी, जीवन हो सुखकारी ॥
हो विनाश मेरे विकार सब, सदगुण करूं प्रकाशित ।
कृपा करो हे मेरे गुरुजी, बंधन काट मुरारी ॥
विष्णुतीर्थ प्रभु मेरे गुरुवर, हूं मैं शरण तुम्हारी ।
तीर्थ शिवोम् विनय चरणों में, राखो लाज हमारी ॥

(५१) चिदाकाश घर कीजै साधो

चिदाकाश घर कीजै ।
जहां बरसै आनन्द निरन्तर, अमृत रस तहां पीजै ॥
इडा पिंगला और सुषुम्ना, तीनों वहीं समातीं ।
किरिया सभी विलीन वहीं पर, अनन्द अपारा लीजै ॥
चिदाकाश ही जग प्रगटावे, वा में ही मिल जावै ।
मायामय तब ही दुख छूटै, मन में ही सुख पावै ॥
चिदाकाश सब स्वयं सिद्ध है, अंहकार मिट जावे ।
मिथ्या तज अभिमान जगत का, चिदानन्द चित्त दीजै ॥
सीमित भाव, हृदय भी सीमित, पर चैतन्य असीमित ।
कृपा बिना यह प्रकट न होवै, कृपा प्राप्त कर लीजै ॥
विष्णुतीर्थ प्रभु अगम अगोचर, दया दृष्टि हो मुझ पर ।
तीर्थ शिवोम् शरण में आया, सर्व अनुग्रह कीजै ॥

(५२) छूटा सकल पसारा हो

जैसे दीप जले बिन नहीं, घर माहीं उजियारा, हो ।
शक्ति परकाशित, मन माहीं चमकारा हो ॥
घर अंधियारा दूर हो जैसे, सूझ सभी कुछ पड़ती है ।
ऐसे शक्ति नाम दीखता, क्रिया अनेक प्रकारा हो ।
अहंकार का परदा मिटता, द्रष्टा भाव उदय होता ।
अजब अलौकिक, सीमित, करत अपारा हो ॥
अनेकों परगट होते, माया रंग उतर जाता ।
मधुर प्रकाश दिखाई देते, पाप जले अंगारा हो ।
राग वासना मैल उतरती, राम शक्ति और भक्ति से ।
त्याग तीन गुण, करि निर्मलता, मन होवै उजियारा हो ॥
कर्म चक्र टूटे अंदर से, जग में रागहीन होता ।
नाम शक्ति अति ही बलकारी, टूटा बंधन भारा हो ॥
विष्णु तीर्थ प्रभु कृपा अनंता, अनत किया विस्तारा हो ।
तीर्थ शिवोम् है धन्य हुआ अब, छूटा सकल पसारा हो ॥

(५३) गगन में उलट कमल लटकाहीं

गगन में उलट कमल लटकाहीं, जा में दीपक जलता जाहीं ।
बिना तेल बाती परकाशित, उज्ज्वलता उर माहीं ॥
कमल को जल बिन सींचत कोई, रूप अलौकिक उसका रहता ।
न कोई जाने, न कोई सुनता, ज्ञानी ही सुन पाहीं ॥
गुरु का मारग वहीं जात है, गुरु ही मारग दिखलाता ।
अंतज्योति जलत निरन्तर, घट में ही मिल जाहीं ॥
गूंजत नाद है सतत निरन्तर, सुन्दर दृश्य अनेकों ।
बिन किरिया के किरिया परगट, पर जानत को नाहीं ॥
विष्णुतीर्थ प्रभु कृपा दीन पर, आया शरण तुम्हारी ।
तीर्थ शिवोम् है चरणीं लागा, गगने थिर हो जाहीं ॥

(५४) प्रभुजी आई तेरे द्वार

प्रभुजी आई तेरे द्वार ।
मन की दुविधा हर लो प्रियतम, उलझ रही संसार ॥
मैं कुलटा जगलीन अभागिन, डूब रही जल विषयन में।
फिर भी मन भोगों में रमता, कैसे करूं पुकार ॥
मन मलीन संशय अति भारी, डूब रहा शंकाओं में ।
कैसे उतरूं पार प्रभुजी, उलझी मैं मंझधार ॥
कुछ भी यत्न करूं मुक्ति का छूट नहीं मैं पाती हूं।
थकी हार में द्वारे आई, कर दो बेड़ा पार ॥
विष्णु तीर्थ प्रभु सदगुरु स्वामी, तुम समर्थ हो अन्तर्यामी ।
तीर्थ शिवोम् शरण में आई, मुक्त करो सरकार ॥

(५५) कृपा दृष्टि बिन होत नहीं कुछ

कृपा दृष्टि बिन होत नहीं कुछ, पच पच मानव यत्न करे ।
कृपा दृष्टि है अनंत अपारा, क्षण में बंधन मुक्त करे ।
अहंकार में बंध कर प्राणी, राग युक्त साधन करता ।
मन वांछित फल प्राप्त न होता, कितना भी वह यत्न करे ॥
अहंकार दीवार बीच में, कृपामुखी मन होत नहीं ।
करे समर्पण भाव युक्त हो, मानव अनुभव प्राप्त करे ॥
भटक भटक जग देखा सारा, स्वार्थ परायण सब कोई ।
सदगुरुदेव ही कृपाशील हो, भवसागर के पार करे ।
मैं याचक बन गुरु कृपा का, श्री चरणों में आया हूं।
दया करो गुरुदेव दीन पर, विपदा किरिया दूर करे ॥
कैसे विनय करूं प्रभु मोरे, सभी गुणों से हीन खड़ा ।
कृपा तुम्हारी एक भरोसा, शरण पड़े के कष्ट हरे ॥
सदगुरु देव शरण में आया, विष्णु तीर्थ प्रभु कृपा करो ।
तीर्थ शिवोम् अन्तर हो जाग्रत, क्षीण पाप शक्ति कर दे ॥

(५६) उलटी गंगा बहे न जब तक

उलटी गंगा बहे न जब तक, भजन राम का होत नहीं ।
मन विषयों में रमता रहता, जग छुटकारा होत नहीं ॥
कर उलझा प्रपंच में ऐसा, सुखी दुखी होता रहता ।
भोग वासना तृप्त न होती, संयत वृत्ति होत नहीं ॥
बनका ऐसा मूड बना है, श्रेय प्रेय जानत नाहीं ।
ऐसे में आनन्द कहां है? मिलन राम का होत नहीं ॥
जब गंगा अन्तर में बहती, तभी राम सन्मुख होते ।
अद्भुत क्रिया राम की शक्ति, बिन किरिया मुक्ति होत नहीं ।
उलटी गंगा गुरु कृपा से, दर्शन देती साधक को ।
भांति-भांति की क्रिया अलौकिक, करना कुछ भी होत नहीं ।
विष्णु तीर्थ प्रभु तुमरी कृपा से, गंगा उलट भई मोरी ।
तीर्थ शिवोम् रंगा अब ऐसा, दुख संशय अब होत नहीं ॥

(५७) मैं मन को समझावत थाकी

मैं मन को समझावत थाकी, मन वश में नहीं आवत है ।
जगत वासनामय दुखदायी, पर मन अपनी गावत है ॥
मनवा धावत जग विषयन को, पकड़े हाथ न आवत है ।
लाख सीख दे उसको कोई, वह तो धावत धावत है ॥
मन विषयों में सुख को खोजे, दुख ही भरा जगत में है ।
लाख दुखी हो मनवा मेरा, पर सुख जग में खोजत है ॥
अब तो मैं थक हारी उससे, सुख नाहीं है राम बिना ।
राम छोड़ दुःख ही दुःख जग में, पर मनवा नहीं मानत ।
विष्णु तीर्थ प्रभु कृपा करो अब, मन तो तुमरे अर्पण है ।
तुमरे चरणों में ही मनवा, अब तो वह सुख पावत है ॥
तीर्थ शिवोम् विनती कर जोड़े, दया शील हो अब मुझ पर ।
चरनन छोड़ कहां मैं जाऊं, चरनन ही सुख मानत है ॥

(५८)मो को रंगदीना

मेरे प्रियतम मो को रंग दीना, ।
मैं जग माहीं भटक रही थी, दुविधा सारी भंग कीना ॥
ऐसी कृपा करी मेरे प्रियतम, भोगी मनवा टूट गया।
जगत पसारा छूटा जी से, मुक्त भई मैं ढंग हीना ॥
प्रियतम मोरा सन्मुख मोरे, प्रेम है मन में भरा हुआ।
प्रभु अनुराग हुआ हिरदय में, प्रेम रंग से रंग दीना ॥
सद्गुरुदेव अनुग्रह कीना, मार्ग प्रेम का दिखलाया ।
विरहणी मस्त भई अब ऐसी, मोह जगत का भंग कीना ॥
प्रभु प्रेम में रंग हुआ मन, विषयों में अब जात नहीं ।
माया छूटी जगत पसारा, मन की ममता भंग कीना ॥
सारा जग है प्रेम मगन अब, सूझत नाहीं प्रेम बिना ।
प्रेम ही अन्दर, प्रेम है बाहर, हृदय प्रेम में रंग दीना ॥
विष्णु तीर्थ प्रभु तुमरी कृपा से, मो पर प्रियतम रीझ गया ।
रंग पिचकारी मो पर डारी, दिव्य अलौकिक रंग कीना ॥
तीर्थ शिवोम् मस्त है ऐसा, मन में अब आनन्द ही है।
कैसी तृष्णा माया कैसी, अब तो मो को रंग दीना ॥

(५९)मन तो मानत नाहीं

काह करौं ! मन मानत नाहीं
फिरि - फिरि धावत है विषयन को, बात सुनत कछु नाहीं ।
संग करत अविवेक कुबुद्धि, पकरि में आवत नाहीं ॥
सद्गुरु देव कृपा बिन अपनो, पार परत है नाहीं ।
तीर्थ शिवोम् विनय गुरु आगे, मन तो मानत नाहीं ॥

(६०) आज मोहे भया अति आनंद

आज मोहे भया अति आनन्द ।
निरखि करि श्याम सुन्दर को, होवत परमानन्द ॥
बजावत वंशी मन में, होवत नाद मनोहर ।
मेरा प्रभु हर लीनो, मैं पाऊं आनन्द ॥
मंत्री बनावत मधुर-मधुर वह, मैं सुनती रह जाऊं ।
बन का रस अब सूख गया है, मन पावत आनन्द ॥
श्याम है वाचत हृदय गगन में, करता क्रिया अलौकिक ।
भया है मन अभिमान रहित अब, अंग भरा आनन्द ॥
कर्म विहीन हुआ मन मेरा, न कुछ करू न चाहूं ।
श्याम सुन्दर अन्तर में परगट, मनवा रमा आनन्द ॥
विष्णु तीर्थ प्रभु तुमरी कृपा से, मैं अनुभव यह पाया ।
श्याम सुन्दर है नाचत गावत, अन्तर में आनन्द ॥
तीर्थ शिवोम् विनति कर जोड़े, मन अब अन्य न जावे ।
उठत बैठत सोवत खावत, डूबत रहूं आनन्द ॥

(६१) प्रभु बिन चारों ओर अंधेरा

प्रभु बिन चारों ओर अंधेरा ।
माया का तम फैला जग में, होवत नहीं सवेरा ॥
तम का परदा, मोह घना है, अन्तर्ज्ञान न सूझे ।
मैं हूं कौन, कहां से आया, पड़ा हूं बीच कुहेरा ॥
भय सागर अनन्त है फैला, पार मैं कैसे जाऊं ।
भांति-भांति के हिंसक प्राणी, है यह अति गहेरा ॥
विश्व वासना डेरा डाला, चित्त मलीन है मेरा ।
कैसे सागर पार जाऊं मैं, विषयन किया बसेरा ॥
विष्णु तीर्थ प्रभु कृपा दीन पर, विपद पड़ी अति भारी ।
कोई मारग सूझ न पाता, भटकत बीच अंधेरा ॥
तीर्थ शिवोम् विनति कर जोड़े, सदगुरु विरद तुम्हारी ।
शरद पड़े की लाज सम्भालो, तम में पड़ा घनेरा ॥

(६२)साधो में सद्गुरु को ध्याऊं

साधो मैं सद्गुरु को ध्याऊं ।
जो सद्गुरु भव बंधन काटे, मैं आनन्द को पाऊं ॥
जो सद्गुरु अन्तर परकाशित, चिदाकाश मैं जाऊं।
निश्चल होए मगन हुई बैठूं, राम निरन्तर गाऊं ॥
सतगुरु मेरा ज्ञान धनी हो, सहज समाधि लावे ।
निग्रह और अनुग्रह समरथ, मार्ग सहज मैं पाऊं ॥
ज्ञानी जति सती हो पूरा, योग युक्त हो बैठे।
कृपा प्राप्त वा सद्गुरु की मैं, आसन डोल न जाऊं ॥
मेरा सद्गुरु ऐसा ध्यानी, सहज में ध्यान लगावे ।
अन्तर्शक्ति क्रियाशील हो, द्रष्टा में हुई जाऊं ॥
विष्णु तीर्थ प्रभु ऐसे सद्गुरु, प्रभु कृपा से पाया।
तीर्थ शिवोम् विनती कर जोड़े, निजानन्द मैं पाऊं ॥

(६३)जो पाया सो गुरु कृपा से

जो पाया सो गुरु कृपा से, और नहीं कुछ पाया।
हर का भजन, साध की सेवा, नाम राम का गाया ॥
मन में प्रेम, कृपा सद्गुरु की, अंतर्ज्योति जागी ।
मस्ती छाई दिव्य क्रियाएं, राम मेरे मन भाया ॥
राम नाम धन दीना सद्गुरु, लीला उसकी न्यारी ।
स्वयं सिद्ध किरियाएं होतीं, चेतन का सुख पाया ॥
राम बाण मेरे उर लागा, अनुभव होत निरन्तर ।
अन्तर्मुखी हुआ मन मेरा, जगत ज्ञान बिसराया ॥
विष्णु तीर्थ प्रभु तुमरी कृपा से, मन आनन्दित मेरा ।
दुख विकार संशय सब भागे, अन्तर का सुख पाया ॥
तीर्थ शिवोम् विनती कर जोड़े सद्गुरु तेरी लीला ।
मैं देखूं नित अन्दर अपने, भूल मोह और माया ॥

(६४) प्रभु जी आवत काहे नाहीं

प्रभु जी आवत काहे नाहीं ।
न जाने क्या मन में आई सुख दुख सब विसराई ॥
शृंगार मोहे नहीं भावे, अन्तर अगन लगाई।
ज्ञान की चर्चा सुन सुन थाकी, जगत बिसारे बैठी ॥
हिरदय प्रभु मिलन को, छवि दिखावत नाहीं ।
प्रेम का नाद गूंजता अन्दर, मैं सुन भागी आई ॥
करत प्रणाम तेरे दर आगे, अन्य सूझता नाहीं ।
विष्णु तीर्थ प्रभु कृपा करो अब, प्रेम की राह दिखाओं ॥
तीर्थ शिवोम् हृदय की पीड़ा, कोई जानत नाहीं ॥

(६५) नाच नाच के मैं थक हारा

तुम नाचन मोही कहा।
नाच नाच के मैं थक हारा, मनवा मूढ महा ॥
भोग वासना मोहे नचावे, जग चौपाल बना।
मैं नाचूं वह ताल देत है, कुछ भी नाहीं लहा ॥
इन्द्रिय स्मृती जग विषयन में, जीवन व्यर्थ बना ।
बालन नाचत पाओं सूजे, मैं भव माहीं बहा ॥
केशव कृपा हुई अब मो पर, प्रियतम आप बना।
फिर भी नाचत रहा जगत में, मन अज्ञान रहा ॥
मो पर अब तो रीझो गिरधर, पाओं पकड़ रहा।
नाचन मोरा छूटे प्रभुजी, विपदा हरो महा ॥
विष्णुतीर्थ प्रभु किरिया मो पर, हूँ मैं शरण पड़ा।
तीर्थ शिवोम् विनय कर जोड़े, डूबत जाए रहा।

(६६)जब तक आतम राम न पायो

जब तक आतम राम न पायो ।
तब तक जगत सत्य परकाशित, विरथा जनम गंवायो ॥
विषय भोग में थिरता नाहीं, भोग भोग मर जावे ।
भटक भटक कर जगत निरर्थक, यूँ ही समय गवांयो ॥
मंदिर मंदिर तीरथ तीरथ, धावत जग में फिरता ।
आत्म तत्व न ची तब तक, कुछ भी हाथ न आयो ।
अंहकार से युक्त जीव, जप तप साधन है करता ।
गुरु कृपा का आश्रय नाहीं, मारग कभी न पायो ॥
गुरु कृपा ही द्वार है ऐसा, जो आतम को खुलता ।
विषय वासना त्याग जगत की, मन की थिरता पायो ॥
विष्णु तीर्थ प्रभु किरपा कीनी, भेद ज्ञान समझायो ।
तीर्थ शिवोम् मस्त मन ऐसा, आतम मार्ग लखायो ॥

(६७)हरि से क्यों न करे तू हेत

हरि से क्यों न करे तू हेत ।
जनम अमोलक पाया तूने, व्यर्थ गंवाए देत ॥
जग भोगों में मानुष जीवन, यूँ ही नष्ट करता रहता ।
मन निर्मलता लक्ष है तेरा, अब तू प्राणी चेत ॥
इधर उधर तू भटक भटक कर, समय बिगाड़े है अपना ।
अब तक समझ न आई तुझको, राम नाम न लेत ॥
विष्णु तीर्थ प्रभु किरिया करते, सूझ पड़े तेरे मन में ।
तीर्थ शिवोम् सफल हो जीवन, मन में प्रभु का हेत ॥

(६८)जा के अगन लगी....

जा के अगन लगी सोई जाने ।
हृदय अन्दर ही अन्दर, बाहर सभी अजाने ॥
लागी प्रेम की अग्नि, धधक धधक रह जावे ।
मस्त है विषय भोग में, वह क्या हिरदय जाने ॥
बवाली प्रभु प्रेम की, मन में राम समाया ।
अंग और रोम रोम में, आया वह अनजाने ॥
बाई हृदय का अजब अनोखा, मन में आप समाया ।
अन्त भई वियोग की पीड़ा, कोई कैसे जाने ।
मेरे हिन्दय में छाया, याद उसी की रहती ।
देखन, माता, मन की कोई जाने ॥
तीर्थ प्रभु अन्तर्यामी, गुप्त बात न कोई।
शिवोम् मिला गुरु ऐसा, जो घट-घट की जाने ॥

(६९)वैराग्य बिन

वैराग्य के मार्ग पर चलना कठिन है
सिम उतारे हाथ पर रखना कठिन है
लड़ते हैं तलवार बिन मैदान में
हाथ खाली कवच बिन लड़ना कठिन है
मानसिक शक्ति ही केवल साथ में है
जो नहीं है सामने लड़ना कठिन है
पांच हैं शत्रु जो बैठे चित्त में हैं
हैं बड़े बलवान वह लड़ना कठिन है
युद्ध है होता निरन्तर सामने से
चूक हो कर गिर गए बचना कठिन है
हो कृपा गुरुदेव की मुश्किल नहीं कुछ
फिर भला वैराग्य न, कहना कठिन है
हाथ जोड़े मांगता शिवोम् यह है
वैराग्य बिन निभना मेरा जीवन कठिन है

(७०)रहे आस न जग की

पंछी उड़ा आकाश, तोड़ सीमाएं जग की
कलरव करे अनूप, छूट गई माया जग की
नाम न रूप रंग नहीं वां पर, नहीं सकल संसारा
जगत के मिथ्या भाव नहीं हैं, छूटी तृष्णा जग की
मेरा तेरा और पराया, राग द्वेष हैं बंधन
ऊपर उड़ा आकाश में पंछी, छूटी आशा जग की
नहीं जगत में लेना देना, नहीं निराशा आशा
मन उन्मुक्त हुआ अब ऐसा नहीं निराशा जग की
विष्णु तीर्थ प्रभु किरिया कीजो, यही अवस्था मन की
तीर्थ शिवोम् दया कर दीजो, रहे आस न जग की

(७१)मेरे सद्गुरु जैसा को नाहीं

मेरे सद्गुरु जैसा को नाहीं
जैसे पक्षी जाय डाल पर, गुरु शक्ति मन माहीं
गुरु मारग के पाट खुल गए, हुआ अन्तर उजियारा
आतम ज्योति हुई परकाशित, मन आनन्द भर जाई
गुरु शक्ति जब जागी अन्दर, मन का तम सब भागा
आतम मार्ग खुला तब ऐसा, जीव समाता जाई
मन में सब आनन्द भरा है, चारों दिशा प्रकाशित
दुःख भागे सुख आए विराजे, महिमा कही न जाई
कृपा करो गुरुदेव अनूठी, तीर्थ शिवोम् कृतारथ
सीमा टूट, असीम हुआ मन, मन ही मन मुस्काई